NALANDA OPEN UNIVERSITY

Compartmental Examination, 2007

Hindi (Hons)

Part-I, Paper-I

Time: 3.00 Hrs. **Full Marks: 70**

[हिन्दी काव्य (प्राचीन)]

किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिये, जिनमें से प्रत्येक खण्ड से कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-क)

1. कबीर के पठित पदों के आधार पर गुरू और नाम महिमा का वर्णन कीजिए।
2. जायसी के काव्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
3. तुलसी दास का साहित्यिक परिचय दीजिए।
4. "बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है" इस उक्ति की व्याख्या कीजिए।

(खण्ड-ख)

5. "विद्यापति श्रृंगारिक कवि हैं", इसका सोदाहरण विवेचन कीजिए।
6. "रहीम ने अपने काव्य में एक साथ भक्ति, रीति और नीति की त्रिवेणी प्रवाहित की है।" इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

(खण्ड-ग)

7. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(अ) अवधू, माया तजी न जाई।
गिरह तजके बस्तर बाँधा, बस्तर तजके फेरी।।
काम तजेतें क्रोध न जाई, क्रोध तजेतें लोभा।
लोभ तजे अहंकार न जाई, मान-बढ़ाई सोभा।।
मन बैरागी माया त्यागी, शब्द में सुरत समाई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह गम बिरले पाई।।

(ब) भए अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी,
याही दुख हमै जक लागी हाय-हाय है।
तुम तौ निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमै सूल सेलनि सो क्योंहुँन भुलाय है।
मीठे-मीठे बोल बोल ठगी पहिलैं तो तब,
अब जिय जारत कहौं धौ कौन न्याय है।
सुनी है कै नाही यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपाय है सु कैसे कलपाय है।।

8. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(अ) पथिक ! सँदेसों कहियो जाय।
आवैंगे हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाय।।
याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।
कहँ लौं कीर्ति मानिए तुम्हरी बड़ो कियो पय प्याय।।
कहियो जाय नंदबाबा सो, अरू गसि पक्रयो पाय
दोऊ दुखी होंन नहिं पावहि धूमरि धौरी गाय।।
यद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिन कछु न सुहाय।
सूरदास ब्रजवासी लोगानि भेंटत हृदय जुड़ाय।।

(ब) (i) जो बड़ेन को लघु कहै, नहिं रहीम घटि जाँहि।
गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं।।

(ii) नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली कली ही सौं बंध्यौ, आगे कवान हवाल।।

(खण्ड–घ)

9. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(अ) राम बचन सुनि सभै समाजू। जनु जलनिधि महुँ विकल जहाजू।।
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारूत अनुकूला।।
पावन पयँ तिहूँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अध ओध नसाहीं।।
मंगल मूरति लोचन भरि-भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि।।
राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं।।
झरना झरहिं सुधासम बारी। त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी।।
विपट बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहुभाँति।।
सुन्दर सिला सुख तरू छाहीं। जाइ बरनि जन छबि कोहि पाहीं।।
सरनि सरोरूह जल विहग कूजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग।।

(ब) (i) चाह गयी चिंता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए वे ही साहन साह।।

(ii) पिसु सो कहेउ संदसेड़ा, हे भौंरा! हे काग।
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहिक धुआँ हम्ह लाग।।

10. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(अ) साबन बारिस मह अतिवानी। भरनि भरइ हौ बिरह झुरानी।
लागु पुनर्बसु पीऊ न देखा। भै बाउरि कहं सुंत सरेखा।
रकत क आंसु परे भुइँ टूटी। चली जनु बीर बहूटी।
साखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियर मुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिंडोल जस डोलै मोरा। बिहर झुलाव देइ झंकोरा।
बाट असूक अथाह गंभीरा। जिउ बाउर भा भवै गंभीरा।
जग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मो नव खेवक बिनु थाकी।
परबत समुंद अगम बिच बन बेहड़ धन ढंख।
किमी करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पांव न पंख।।

(ब) (i) जप माला छापै तिलक सरै न एकौ कामु।
मन काँचे नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।

(ii) संतन जात न पूछो निरगुनियाँ।
साध ब्राह्मण साध छतरी, साधै, जाती बनियाँ।
साधनमाँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ।
साधै नाउ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ।

Nalanda Open University
Compartmental Examination, 2007
B.A. Hindi (Hons.), Part-I, Paper-II
[हिन्दी काव्य (आधुनिक)]

Time: 3.00 Hrs. **Full Marks: 70**

पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिये, जिनमें से प्रत्येक खण्ड से कम से कम एक प्रश्न का चयन करना आवश्यक है । सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

(खण्ड–क)

1. 'भारत–भारती' की विशेषताओं का सम्यक् निष्पण कीजिए ।
2. 'आँसू' काव्य का प्रतिपाद्य बताइए ।
3. महादेवी के 'गीतकाव्य' की विशेषताओं का विवेचन कीजिए ।

(खण्ड–ख)

4. माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय चेना पर निबंध लिखिए ।
5. राष्ट्रकवि दिनकर का कवि–परिचय दीजिए ।
6. 'मधुशाला के माध्यम से कवि ने वर्त्तमान सामाजिक–धार्मिक रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया है', स्पष्ट कीजिए ।

(खण्ड–ग)

7. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :–

(i) संसार में किसका समय है एक–सा रहता सदा,
है निशि–दिवा–सी घूमती सर्वत्र विपदा–सम्पदा ।
जो आज एक अनाथ है, नरनाथ कल होता वही;
जो आज उत्सव–मग्न है, कल शोक से रोता वही ।।

(ii) इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती,
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती ?

8. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :–

(i) मुझ भाग्यहीन की तू संबल,
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही !
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म रहे नत सदा माथ,
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के–से शतदल !
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण ।

(ii) मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर
सौरभ को फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम सा घुल रे मृदुमन
ले प्रकाश का सिन्धु अपरिमित
तेरे जीवन का अणु गल गल

(खण्ड–घ)

9. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :–

(i) ऊँची काली दीवारों के घेरे में, डाकू चोरों बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट भर खाना, मरने भी देते नहीं तड़प रह जाना।
जीवन पर अब दिन रात कड़ा पहरा है, शासन है या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली, इस समय कालिमामयी जागी क्यू आती

क्यों हूक पड़ी? वेदना बोझ बाती–सी
कोकिल बोलो तो! क्या लूटा?
मृदुल–वैभव की रखवाली–सी!

(ii) एक द्रुम जिसके लगाए लग सके
काव्य के जग का सहज नायक वही है
प्रेरणा जिसके जगाए जग सके
देश का सबसे बड़ा गायक वही है

10. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :–

(i) पर उस सलोनी के पीछे–पीछे
घुस आईं बिजली की बत्तियाँ
बेहया धड़–धड़ गाड़ियों की
मानुषों की खड़ी–खड़ी बोलियाँ

(ii) मुसलमान और हिन्दू हैं दो,
एक, मगर उनका प्याला,
एक मगर, उनका मदिरालय,
एक, मगर, उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक
मस्जिद–मन्दिर में जाते
वैर बढ़ाते मस्जिद–मंदिर
मेल कराती मधुशाला।

•••

NALANDA OPEN UNIVERSITY
Compartmental Examination, 2007
Hindi (Subsidiary)
Part-I, Paper-I

Time: 3.00 Hrs. **Full Marks: 70**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये :-
(क) विद्यापति का काव्यात्मक परिचय दीजिये ।
(ख) सूर की साहित्यिक साधना का विवेचन कीजिये ।
(ग) तुलसी दास का साहित्य परिचय दीजिये ।
(घ) हिन्दी की सतसई परम्परा में बिहारी का स्थान निरूपित कीजिये।
(ड.) धनानन्द के काव्य में व्यक्त प्रेम के स्वरूपों का निर्धारण कीजिये।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-
(क) गुप्तजी की सांस्कृतिक-सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये।
(ख) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिये।
(ग) प्रगतिवाद एवं निराला पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।
(घ) कवि पंत के जीवन-दर्शन की व्याख्या कीजिये।
(ड.) महादेवी बर्मा की कृतियों की साहित्यिक विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

3. निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक की व्याख्या कीजिये :

(क) "विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली ।''

(ख) "समरस थे जड़ या चेतन,
सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती
आनन्द अखंड घना था।''

(ग) " यौं घनआनंद छावत भावत जान सजीवन और तें आबत ।
लोग हैं लागि कवित बनावत मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।।''

4. किन्हीं दो के उदाहरण सहित लक्षण का उल्लेख कीजिए :-
मात्रिकछंदक, अलंकार, सोरठा, दोहा, अनुप्रास ।